Global Enlightenment for Golden Age

स्वर्णिम युग के लिए वैश्विक जागृति

आज ब्रह्माकुमारीज़ संस्था द्वारा वर्ष 2018–19 की सेवाओं के वार्षिक विषय (थीम) "स्वर्णिम युग के लिए वैश्विक जागृति" का चण्डीगढ़ टैगोर थियेटर में एक भव्य समारोह द्वारा शुभारम्भ किया गया । कार्यक्रम में नगर के गणमाण्य व्यक्ति उपस्थित रहे जिनमें जस्टिस श्रीमति दया चौधरी मुख्य अतिथि थीं । उनके अलावा आई ए एस श्री अनुराग अग्रवाल व सुश्री आनन्दिता मित्रा, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री पवन कुमार बन्सल, डी0 क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी श्री मुनीष कपूर मंच पर उपस्थित रहे ।

कार्यक्रम की शुरुआत मेडिटेशन द्वारा हुई जिसके बाद बी के अनीता दीदी ने संस्था के परिचय दिया । उसके बाद बी के भ्राता अमीर चन्द जी ने मेहमानों का परिचय देते हुए कहा कि हम आत्म जागृति से ही विश्व जागृति की ओर अग्रसर हो सकते हैं । हम जो भी काम करें उसमें परमात्म गुण व शक्तियां झलकनी चाहिएं ।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के गुरूग्राम स्थित "ओम् शन्ति रिट्रीट सेण्टर" की डायरेक्टर राजयोगिनी बी के आशा दीदी जी कार्यक्रम की मुख्य वक्ता थीं । उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि आत्म जागृति के लिए ज्ञान के साथ उसकी धारणा का होना भी जरूरी है जिससे हमें परमात्म शक्ति व बल प्राप्त होता है । आज हमारी आत्मा परमात्मा से न जुड़ कर भौतिक पदार्थों में लिप्त है । गीता का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि संसार में जीने के दो तरीके हैं, दैवी व आसुरी । आत्मिक स्थिति में न होने से विकार मनुष्य पर प्रभावी हो जाते हैं और विकारों पर विजय ही आत्मिक जगृति है । हमें यह समझना जरूरी है कि पाप और पुण्य आत्मा के साथ हैं शरीर के साथ नहीं । दैवीय या आसुरी कर्मों द्वारा ही इस धरती पर हम अपना स्वर्ग या नर्क खुद चुनते हैं । परमात्मा से हम तभी जुड़ सकते हैं जब हमारे सभी कर्मों में दैवीय झलक हो और यह राजयोग द्वारा ही सम्भव है । राजयोग कोई शरीर को साधने का योग नहीं बल्कि आत्मा को परमात्मा से जोड़ने की सहज विधि है । अंत में उन्होंने कहा कि विश्व को बदलनें की बात तब तक नहीं फलती जब तक हम स्वयं में बदलाव की यात्र शुरू नहीं करते ।

इसके बाद सभी मेहमानों द्वारा दीप प्रज्जवलन करके "स्वर्णिम युग के लिए वैश्विक जागृति" थीम को लांच किया गया । कार्यक्रम के दौरान ही नन्हीं कुमारियों वेधा, कलश व पलक ने सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किया और भाई जय गोपाल लूथरा ने मनमोहक गीत गाया ।

मुख्य अतिथि जस्टिस श्रीमति दया चौधरी जी ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्था को निःस्वार्थ सेवाओं के लिए बधाई दी । उन्होंने कहा कि कोर्ट में काम करते कई बार, टी वी चैनलों व समाचार पत्रों में ऐसी परिस्थितियां देखने में आती हैं कि मन को दुःख लगता है कि क्या कभी यह समाज सुन्दर व सतयुगी बन पाएगा । उन्होंने भी राजयोग द्वारा आध्यात्मिकता से जुड़ने पर बल दिया ।

श्री पवन कुमार बन्सल ने क्रोध व अहंकार को इन्सान का सबसे बड़ा शत्रु बताया जिन्हें हम भगवान को अपने दिल में बिठा कर उसके ज्ञान से ही दूर कर सकते हैं । उन्होंने कहा कि दूसरे के बदलाव से पहले स्वयं का बदलाव जरूरी है । श्री मुनीश कपूर ने भी अपने कथन में कहा कि हमें अपने कर्मों में दिव्यता लाने की आवश्यकता है ।

कार्यक्रम के अन्त में बी के कविता दीदी ने उपस्थित जन समूह को मेडिटेशन करवा परमात्म अनुभूति कराई ।

बी के उत्तरा दीदी

क्षेत्रीय मुख्य प्रबन्धक